# कृषि उद्यमिता: संकल्प से समृद्धि की ओर कृषक

**विवेक व्यास**

उद्यमिता (entrepreneurship) नये संगठन आरम्भ करने की भावना को कहते हैं। किसी वर्तमान या भावी अवसर का पूर्वानुमान करके मुख्यत: कोई व्यावसायिक संगठन प्रारम्भ करना उद्यमिता का मुख्य पहलू है। उद्यमिता में एक तरफ भरपूर लाभ कमाने की सम्भावना होती है तो दूसरी तरफ जोखिम, अनिश्चितता और अन्य खतरे की भी प्रबल संभावना होता है।

उद्यमी मौलिक (सृजनात्मक) चिंतक होता है। वह एक नव प्रवर्तक है जो पूंजी लगाता है और जोखिम उठाने के लिए आगे आता है। इस प्रक्रिया में वह रोजगार का सृजन करता है। समस्याओं को सुलझाता है गुणवत्ता में वृद्धि करता है तथा श्रेष्ठता की ओर दृष्टि रखता है।

देश के आर्थिक विकास के अर्थ में उद्यमशीलता केवल बड़े व्यवसायों तक ही सीमित नहीं हैं। इसमें लघु उद्यमों को सम्मिलित करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। वास्तव में बहुत से विकसित तथा विकासशील देशों का आर्थिक विकास तथा समृद्धि एवं सम्पन्नता लघु उद्यमों के अविर्भाव का परिणाम है।

उद्यमशीलता का महत्व निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है-

1. लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना।
2. अनुसंधान और विकास प्रणाली में योगदान।
3. राष्ट्र व व्यक्ति विशेष के लिए धन-सम्पत्ति का निर्माण करना।

उद्यम को सफलतापूर्वक चलाने के लिए बहुत से गुणों की आवश्यकता पड़ सकती है, फिर भी पहल, जोखिम उठाने की इच्छाशक्ति, अनुभव से सीखने की योग्यता, अभिप्रेरणा, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की योग्यता गुण महत्वपूर्ण माने जाते हैं ।

## उद्यमी के कार्य

इनमें उद्यम के अवसरों की पहचान, विचारों को कार्यान्वित करना, संभाव्यता अध्ययन, संसाधनों को उपलब्ध कराना, उद्यम की स्थापना, उद्यम का प्रबंधन एवं वृद्धि एवं विकास आदि आता है। निम्नलिखित श्रेणियों में कार्य भी

उद्यमी के प्रमुख कार्य हैं।

1. विनिमय सम्बन्धों का विकास- इन कार्यों के अंतर्गत बाजार में अवसरों की पहचान, दुर्लभ संसाधनों पर अधिकार, आगत क्रय करना, और उत्पादों के विपणन के साथ प्रतियोगिता के लिए तैयार रहना आता है।
2. राजनैतिक प्रशासन कार्यों में राज्य की अफसरशाही को साधना, फर्म के भीतर मानवीय सम्बन्धों का प्रबंधन, ग्राहक एवं आपूर्तिकर्ता के बीच संबंधों का प्रबंध आता है ।
3. प्रबंध नियंत्रण कार्यों में वित्तीय प्रबंधन और उत्पादन प्रबंधन आता है।
4. तकनीकी कार्यों में अन्य संस्थानों से जुड़ाव, यांत्रिकी प्रबंधन, उत्पादन प्रक्रिया और उत्पादन गुणवत्ता के स्तर में सुधार, के साथ नए तकनीक और नए उत्पादों को लाना सम्मिलित है।

विभिन्न उद्यमशीलता इकाइयों में किसान अपने स्वयं के लिए लाभ प्राप्त कर सकते हैं और अपने स्वयं के गांव या जिले या राज्य के विकास में योगदान कर सकते हैं। पूरे देश में हैदराबाद की एग्री क्लिनिक-एग्री बिज़नेस सेंटर (ACABC) योजना की सफलता की कहानियों से हम देख सकते हैं कि कृषि से संबंधित व्यवसाय सफलतापूर्वक किसानों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं और ग्रामीण विकास में योगदान दे रहे हैं।

1. बकरी पालन, वर्मीकम्पोस्ट यूनिट, कस्टम हायरिंग सेंटर, मशरूम की खेती, मछली उत्पादन, डेयरी फार्मिंग, सुअर पालन, फल प्रसंस्करण इकाई, गाय आधारित उत्पाद विकास, दलहन प्रसंस्करण आदि जैसे 5 लाख प्रति वर्ष तक के छोटे कारोबार वाले उद्यम शुरू किए जा सकते हैं।
2. 5 लाख प्रति वर्ष से 50 लाख प्रति वर्ष कृषि पर्यटन, मवेशी चारा प्रसंस्करण इकाई, पशु क्लिनिक, काजू प्रसंस्करण इकाई, हनी बी की खेती, फार्म मशीनरी निर्माण, जैविक खेती, टिशू कल्चर, मिट्टी और भूमि विकास परामर्श, बीज उत्पादन इकाई, फूलों की खेती, नीम आधारित प्रसंस्करण इकाई, जैव उर्वरक उत्पादन इकाई, सूक्ष्म पोषक तत्त्व और पौधा विकास नियामक विनिर्माण इकाई और बांस की खेती शुरू की जा सकती है।
3. सौर ऊर्जा इकाई, मवेशी चारा प्रसंस्करण, कुक्कुट पालन, जैव उर्वरक

और सूक्ष्म पोषक तत्व, चाय नर्सरी, ककड़ी की खेती और निर्यात, जैविक उत्पाद निर्यात, फेरोमोन ट्रैप विनिर्माण, सिंचाई उपकरण निर्माण, प्राकृतिक खेती, आवश्यक तेल निष्कर्षण इकाई, मसाला प्रसंस्करण इकाई आदि जैसे 8000 लाख प्रति वर्ष उद्यमों के बड़े कारोबार के लिए 50–8000 लाख प्रति वर्ष उद्यमों के लिए शुरू किया जा सकता है।

इन सभी उद्यमों का संक्षिप्त विवरण युवा उद्यमी दिमागों के लिए उनके पास उपलब्ध संसाधनों के आधार पर अपने स्वयं के उद्यम के लिए विचारों को संश्लेषित करने और उनके आसपास के क्षेत्र में उपलब्ध सुविधा के लिए उपलब्ध है।

**1. एग्री कंसल्टेंसी/ कृषि परामर्श** –

यह वह गतिविधि है जिसमें कृषि प्रथाओं की विशेषज्ञता को परामर्श शुल्क के आधार पर किसानों और अन्य लोगों के साथ साझा किया जाता है। वे किसान जो खेती के विभिन्न पहलुओं जैसे बीज उत्पादन, बीज उपचार, खेती, पौध संरक्षण, सिंचाई, खेत के प्रबंधन और खेत से संबंधित सभी पहलुओं से संबंधित कौशल विकसित करते हैं, किसानों को सलाह प्रदान करते हैं। इस उद्यम के लिए किसान नेटवर्क विकास और गहराई से समझ और क्षेत्र के अद्यतन ज्ञान की आवश्यकता होती है।

**2. कृषि पर्यटन**–

यह किसानों को अपनी नियमित आय के साथ अतिरिक्त लाभ प्रदान करने का एक आगामी क्षेत्र है। कृषि पर आधारित पर्यटन पर्यटकों को क्षेत्र की संस्कृति और खाद्य प्रथाओं के लिए अनुभव प्रदान करता है जबकि किसान अपनी मौजूदा सुविधाओं में पर्यटकों के लिए आवासीय और भोजन व्यवस्था की सुविधा के लिए कुछ देशी संरचनाओं को विकसित कर सकते हैं। गोवा, महाराष्ट्र और पूर्वोत्तर में किसान इस उद्यम को सफलतापूर्वक चला रहे हैं। स्थानीय ज्ञान के साथ खेती और आतिथ्य के ज्ञान के साथ–साथ सोशल मीडिया और नेटवर्किंग की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। सरकार की वर्तमान नीति कृषि उद्यमिता के इस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

**3. पशु स्वास्थ्य परामर्श**–

पशुपालन भारतीय खेती का मूल है, इसलिए किसानों को पशु पालन

परामर्श के लिए नियमित आवश्यकताएं हैं। गाय आधारित खेती, प्राकृतिक खेती और अन्य संबंधित पहलू इन आवश्यकताओं को बढ़ाते हैं। विशेषज्ञों के साथ सही परामर्श खेती को अधिक लाभकारी उद्यम बनाता है। इसलिए देश के सभी हिस्सों में जानवरों में परामर्श का क्षेत्र अत्यधिक लाभदायक है। इस उद्यम के लिए पशु स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान, पेशेवर नेटवर्क, किसानों के व्यापक नेटवर्क, पशु स्वास्थ्य के लिए समय पर और गुणवत्ता सलाह में विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। एआई, टीकाकरण, फ़ीड से संबंधित पहलू, पालतू क्लीनिक, मवेशियों के लिए दिन की देखभाल केंद्र आदि इस उद्यम के आयाम हैं।

**4. बैग विनिर्माण-**

बीज उत्पादन इकाइयों और अन्य उत्पाद पैकेजिंग आवश्यकताओं के लिए कपास बैग विनिर्माण कृषि उद्यमियों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण तरीका है। महाराष्ट्र में कपास उत्पादक किसानों को इन उद्यमों को अपनाने और बीज उत्पादन इकाई और अन्य विनिर्माण इकाइयों में नेटवर्क के साथ आवश्यकता और अनुकूलन के आधार पर अलग-अलग बैग प्रदान किए जा सकते हैं। यह फिर से छोटे उद्यम श्रेणी में एक बहुत ही उपयोगी उद्यम है।

**5. बांस की खेती-**

बांस की व्यावसायिक खेती और बांस की खेती आधारित सलाहकार एक ऐसा क्षेत्र है जहां कृषि उद्यमी अपनी विशेषज्ञता से लाभ कमा सकते हैं। यह उद्यम किसानों के बीच एक नेटवर्क और कम संसाधनों के साथ शुरू किया जा सकता है।

**6. जैव उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्त्व इकाइयां-**

टिकाऊ कृषि और रसायन मुक्त खेती पर नियमित ध्यान देने के साथ, जैव उर्वरकों की आवश्यकताएं दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली हैं। ऐसी सफल इकाइयां पहले से ही उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में चल रही हैं, जिनका कारोबार 7 से 2000 लाख प्रति वर्ष तक है, जिसमें 1-2000 श्रमिक कार्यरत हैं और 3 राज्यों के 8 गांवों को कवर करने वाले 300-62000 किसानों का नेटवर्क होता है। यह एक अत्यधिक आशाजनक और आगामी उद्यम है जिसमें किसान स्वयं टिकाऊ संसाधन विकास के साथ अपनी कृषि इनपुट दक्षता को अपग्रेड कर सकते हैं।

### 7. काजू प्रसंस्करण और परामर्श-

महाराष्ट्र राज्य में किसानों को इन इकाइयों से लाभ मिल रहा है। इस उद्यम का वार्षिक कारोबार 15-50 लाख प्रति वर्ष से अधिक है, जिसमें 4-10 श्रमिक कार्यरत होते हैं और 10-20 गांवों के 50-500 किसानों का नेटवर्क होता है। इसी प्रकार स्थानीय क्षेत्र की कृषि गतिविधियों को सुदृढ़ करने के लिए देशी फलों की प्रसंस्करण इकाइयों को विकसित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए राजस्थान सांगरी में, इन उत्पादों को व्यापक रूप से उपलब्ध कराने के लिए केर, ककड़ी प्रसंस्करण इकाइयों को विकसित किया जा सकता है और यह उपभोक्ताओं के लिए स्वस्थ भोजन और किसानों के लिए उनकी खेती के साथ एक अत्यधिक लाभकारी उद्यम होगा। स्थानीय फलों और नट्स पर आधारित सुपारी प्रसंस्करण इकाइयों और इसी तरह की इकाइयों को विकसित किया जा सकता है।

### 8. पशु चारा प्रसंस्करण इकाइयां-

मवेशी चारा अपने पशुधन के लिए किसानों की एक नियमित आवश्यकता है। स्वस्थ मवेशी अमीर किसानों के संकेत हैं। बदलती जलवायु और स्थिति के साथ मवेशियों को विशिष्ट पोषक तत्त्वों की आवश्यकता होती है और उचित मवेशी फ़ीड के साथ सही सलाह उनके उत्पादन में मूल्य जोड़ती है। गाय आधारित कई उद्यम जैसे दूध और दूध आधारित मूल्य वर्धित उत्पाद, गोमूत्र, गोबर आधारित जैव उर्वरक और अन्य उत्पाद नियमित मवेशी आधारित कमाई के अतिरिक्त हैं। महाराष्ट्र, उड़ीसा और जम्मू-कश्मीर में सफल पशु चारा प्रसंस्करण इकाइयां पहले से ही चल रही हैं, जिनका सालाना कारोबार 15 लाख से 100 लाख तक है; 1-10 कर्मचारियों को रोजगार देना और अपने क्षेत्र के 5-10 गांवों में 500-1000 तक किसानों का एक नेटवर्क होता है। यह भी एक अत्यधिक आशाजनक उद्यम विचार है।

### 9. खीरे की खेती और निर्यात-

स्वास्थ्य चेतना बढ़ रही है और इसलिए स्वस्थ उत्पादों की मांग बढ़ रही है, सलाद विश्व स्तर पर ग्राहकों की प्लेटों में जोड़ रहा है, इसलिए उच्च गुणवत्ता वाले ककड़ी की खेती और इसका निर्यात करना एक अत्यधिक लाभदायक उद्यम बन रहा है। इस उद्यम का 1000 लाख का उच्च वार्षिक कारोबार है, जिसमें 120 कर्मचारी कार्यरत होते हैं, जिसमें 300 गांवों के 5000 किसानों का नेटवर्क होता है। तमिलनाडु

में ऐसे उद्यम सफलतापूर्वक चल रहे हैं और इसी तरह के उद्यम व्यापक नेटवर्क और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के साथ फलों और सब्जियों के निर्यात पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं ताकि उच्च लाभ अर्जित किया जा सके।

**10. कस्टम हायरिंग सेंटर-**

भारत ज्यादातर छोटे और सीमांत किसानों का देश है, जहां छोटे किसानों के पास संसाधन बहुत कम हैं। यहां कृषि उपकरण खरीदना कई किसानों के लिए एक व्यवहार्य विकल्प नहीं है, इसलिए देश के लगभग सभी हिस्सों में कृषि उपकरण किराए पर सेवाओं की अत्यधिक आवश्यकता है। ऐसे उद्यमों का वार्षिक कारोबार 2.2-130 लाख प्रति वर्ष है, जिसमें 3-5 कर्मचारी कार्यरत होते हैं, जिसमें 3-50 गांवों में 200 से 5000 किसानों का नेटवर्क होता है। एक छोटी राशि के साथ यह उद्यम सफलतापूर्वक आस-पास के क्षेत्रों में किसानों और खेती को लाभ प्रदान कर सकता है।

**11. डेयरी फार्मिंग, कम्पोस्ट यूनिट और कंसल्टेंसी-**

डेयरी कठिन समय में किसानों के लिए एक मजबूत समर्थन है। डेयरी आधारित खाद इकाइयां और साथी किसानों के लिए परामर्श एक लाभदायक उद्यम बन रहा है। इस तरह के उपक्रम महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, मध्य प्रदेश, असम और देश के कई हिस्सों में लाभप्रद रूप से चल रहे हैं। उद्यम के आसपास के क्षेत्र में 2-50 गांवों के 150-6000 किसानों के नेटवर्क के साथ 1-10 श्रमिकों को रोजगार देने के साथ प्रति वर्ष 5-45 लाख तक का वार्षिक कारोबार होता है।

**12. आवश्यक तेल निष्कर्षण-**

महाराष्ट्र और तेलंगाना में ऐसे उद्यम प्रति वर्ष 90 लाख के वार्षिक कारोबार के साथ चल रहे हैं, जिसमें 2-4 श्रमिकों को रोजगार दिया जाता है, जिसमें आसपास के गांवों के 10-50 किसानों का नेटवर्क है। लेमन ग्रास, सिट्रोनेला, तुलसी आदि से तेल की निकासी उच्च मांग में है। इसके लिए कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग और सफल बिजनेस के लिए बिजनेस के लिए कमर्शियल कॉन्ट्रैक्ट विकसित किए जा सकते हैं।

**13. फार्म मशीनरी विनिर्माण-**

महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में ऐसे उपक्रम संचालित हो रहे हैं जो किसानों

की दक्षता बढ़ाने के लिए कृषि मशीनरी का निर्माण करते हैं। ये मशीनें जैविक खेती में उनकी मदद करती हैं, इसके अलावा रोटावेटर, कल्टीवेटर, स्प्रेयर, सबसोलर, लेजर, इको फ्रेंडली सिकल, वीडर आदि किसानों की दक्षता बढ़ाने के लिए निर्मित किए गए है। ऐसे उद्यमों का कारोबार 40 से 200 लाख प्रति वर्ष तक होता है, जिसमें 5-10 कर्मचारी शामिल होते हैं, जिसमें कुछ गांवों से लेकर कई ब्लॉकों तक के 1000-1500 किसान शामिल होते हैं।

**14. फेरोमोन ट्रैप निर्माण-**

जैविक खेती में कीटों और रोग को नियंत्रित करने के लिए प्राकृतिक तरीकों का उपयोग किया जाता है, फेरोमोन ट्रैप एक ऐसा उपकरण है। इस प्रकार के उत्पादों की मांग बढ़ रही है, इसलिए ऐसे उपकरणों को प्रदान करने वाले उद्यम पर भी उच्च ध्यान दिया जा रहा है। इस तरह के उद्यम का वार्षिक कारोबार 100 लाख हो सकता है, जिसमें 5-8 श्रमिक कार्यरत हैं, जिसमें 150 गांवों के 1000 किसान शामिल हैं।

**15. मछली उत्पादन-**

विभिन्न खाद्य पदार्थों में मछली पौष्टिक खाद्य पदार्थों में से एक है। मछली की मांग मछली व्यवसाय को बढ़ाने का आधार है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में ऐसे उद्यम 3-10 लाख प्रति वर्ष के बीच वार्षिक कारोबार के साथ सफलतापूर्वक चल रहे हैं, 2-8 श्रमिकों को रोजगार देते हैं और 2 गांवों से पूरे महाराष्ट्र राज्य के 50-1000 किसानों को कवर करते हैं।

**16. फूलों की खेती-**

फूलों की खेती 10-40 लाख प्रति वर्ष के वार्षिक कारोबार के साथ एक अत्यधिक आशाजनक व्यावसायिक उद्यम है, जिसमें 1-6 श्रमिकों को रोजगार मिलता है, जिसमें आसपास के क्षेत्रों के 5-8 गांवों के 150-400 किसान शामिल होते हैं। इस तरह के उपक्रम पहले से ही महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में सफलतापूर्वक चल रहे हैं।

**17. फलों के बाग परामर्श-**

किसान बागों का विकास कर रहे हैं और स्वस्थ बाग विकास के लिए परामर्श प्रदान कर रहे हैं, मौजूदा बागों का विकास कर रहे हैं, बागों के लिए पौधों के

लिए नर्सरी विकसित कर रहे हैं। 100 लाख के वार्षिक कारोबार के साथ, 6-10 श्रमिकों को रोजगार देने के साथ, 10-15 गांवों के 600-1000 किसानों को कवर करने के साथ यह किसानों के लिए एक अत्यधिक लाभकारी व्यवसाय है।

**18. फल प्रसंस्करण इकाई-**

हरियाणा और महाराष्ट्र में किसानों द्वारा मूल्य संवर्धन और प्रसंस्करण द्वारा लाभ प्राप्त करने के लिए फल प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना की जाती है। इससे वे न केवल अच्छी कमाई करते हैं, बल्कि कृषि उपज की बर्बादी को भी कम करते हैं। ऐसे उद्यमों का वार्षिक टर्नओवर 5-30 लाख तक हो सकता है, जिसमें 3-20 श्रमिकों को रोजगार मिलता है, जिसमें 5-11 गांवों के 100-450 किसान शामिल होते हैं।

**19. बकरी पालन और प्रशिक्षण-**

बकरी को गरीब आदमी की गाय के रूप में जाना जाता है। यह उद्यम न्यूनतम निवेश के साथ अत्यधिक लाभदायक है। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में इस तरह के सफल उद्यम 2-80 लाख के वार्षिक कारोबार के साथ काम कर रहे हैं, जिसमें 1-18 श्रमिकों को रोजगार दिया गया है, जिसमें 1 गांव से पूर्ण राज्य तक 50-10000 किसान शामिल हैं। यह कृषि पर आधारित एक लाभदायक उद्यमिता उद्यम के रूप में पूरे देश के लिए व्यवहार्य है।

**20. मधुमक्खी की खेती और परामर्श-**

मधुमक्खी किसानों की सबसे अच्छी दोस्त और प्रकृति की सबसे अच्छी कार्यकर्ता है। शहद की खेती से खेती का समग्र विकास किया जा सकता है। यह सबसे अधिक मांग और अनुशंसित उद्यम है। इसका वार्षिक कारोबार 10-50 लाख है, जिसमें 5-8 श्रमिक कार्यरत हैं, जिसमें हरियाणा राज्य को पूरा करने के लिए 22 गांवों के 125-500 किसान शामिल हैं।

**21. मशरूम की खेती-**

बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा और महाराष्ट्र में इस तरह के उपक्रम फल-फूल रहे हैं। ऐसे उद्यमों के लिए वार्षिक कारोबार 3-15 एलपीए है, जिसमें 1-8 श्रमिक कार्यरत हैं, जिसमें 3-20 गांवों के 75-500 किसान शामिल हैं। कुछ किसान जैविक प्रथाओं के साथ बढ़ रहे हैं और उच्च लाभप्रदता के साथ इसका निर्यात कर रहे हैं।

**22. सूक्ष्म पोषक तत्व और पीजीआर विनिर्माण-**

महाराष्ट्र में ऐसे उद्यम 2-50 लाख प्रति वर्ष के वार्षिक कारोबार के साथ काम कर रहे हैं, जिसमें 2-10 श्रमिकों को रोजगार दिया गया है, जिसमें 5-20 गांवों के 200-1000 किसान शामिल होते हैं। यह फिर से आगामी समय के लिए एक अत्यधिक आशाजनक उद्यम है।

**23. नीम बीज खली और तेल विनिर्माण -**

30-200 लाख प्रति वर्ष के वार्षिक कारोबार के साथ काम करने वाले नीम आधारित उत्पाद उद्यमों की उभरती मांग के साथ, 4-6 श्रमिकों को रोजगार देते हुए, 15-20 गांवों के 150-500 किसानों को कवर करते हैं।

**24. नर्सरी और लैंडस्केपिंग कंसल्टेंसी-**

यह उद्यमिता क्षेत्र में सबसे अधिक मांग वाले उद्यमों में से एक है। इस तरह के उद्यम पहले से ही महाराष्ट्र, यूपी, गुजरात, तमिलनाडु, हरियाणा में 9-150 लाख प्रति वर्ष के वार्षिक कारोबार के साथ सफलतापूर्वक काम कर रहे हैं, जिसमें 7-50 श्रमिकों को रोजगार मिलता है, जिसमें 7 गांवों से 5 राज्यों के 120-5000 किसान शामिल होते हैं। सजावटी बागवानी के लिए नर्सरी भी काम करने का एक बहुत ही आशाजनक क्षेत्र है।

**25. जैविक खेती-**

यूपी और महाराष्ट्र में जैविक तरीकों से खेती केले, गेहूं आदि में सफल उद्यम के रूप में चल रही है। ऐसे उद्यम 5-300 लाख के वार्षिक टर्नओवर के साथ काम करते हैं, जिसमें 5-30 श्रमिकों को रोजगार मिलता है, जिसमें 3-50 गांवों के 150-3000 किसान शामिल होते हैं।

**26. सुअर पालन-**

मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 5-25 लाख के वार्षिक कारोबार के साथ सुअर पालन उद्यम स्थापित किया गया, जिसमें 1-7 श्रमिकों को रोजगार दिया गया, जिसमें 7-25 गांवों के 95-500 किसान शामिल होते हैं।

**27. मुर्गी पालन-**

कृषि किसानों के बीच मुर्गी पालन बहुत प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और असम में ऐसे उद्यम 5 से 2000 लाख प्रति वर्ष

तक के वार्षिक कारोबार के साथ सफलतापूर्वक काम कर रहे हैं, जिसमें 1-110 श्रमिकों को रोजगार दिया गया है, जिसमें 1 गांव से पूरे असम राज्य तक 50-4000 किसान शामिल होते हैं।

**28. बीज उत्पादन, परीक्षण और प्रसंस्करण -**

किसी भी कृषि गतिविधि के लिए आधार बीज। उच्च गुणवत्ता वाले बीज पहली आवश्यकता हैं और हमेशा एक व्यवहार्य व्यवसाय विकल्प बने रहते हैं। इस तरह के व्यावसायिक उद्यमों का वार्षिक व्यवसाय कारोबार 25-100 लाख प्रति वर्ष है, जिसमें 3-30 श्रमिक कार्यरत होते हैं, जिसमें 7-150 गांवों के 90-1000 किसान शामिल होते हैं। पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और हरियाणा में सब्जी बीज का उत्पादन फल-फूल रहा है।

**29. मृदा और जल परीक्षण प्रयोगशाला और परामर्श-**

कृषि इनपुट में बीज और पानी का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। परीक्षण करके खेत से इष्टतम उपज प्राप्त करने के लिए दोनों सही इनपुट निर्धारित किए जा सकते हैं। इस तरह के व्यावसायिक उद्यमों का वार्षिक कारोबार 5-25 लाख प्रति वर्ष है, जिसमें 1-6 श्रमिकों को रोजगार मिलता है, जिसमें क्षेत्र के 20 गांवों से लेकर कई जिलों के 750-15000 किसान शामिल होते हैं।

**30. मसाला प्रसंस्करण इकाई-**

प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन किसानों को लाभ दिलाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मसाला प्रसंस्करण इकाइयां 10-80 लाख प्रति वर्ष के कारोबार के साथ तमिलनाडु और मध्य प्रदेश में चल रही हैं, जिसमें 10 श्रमिक कार्यरत होते हैं, जिसमें 5 गांवों के 200-1000 किसान शामिल होते हैं।

**31. वर्मीकम्पोस्ट इकाई-**

डेयरी के उपोत्पाद से या व्यक्तिगत किसान 2 लाख के वार्षिक टर्नओवर के साथ वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर सकते हैं, जिसमें 1 श्रमिक को रोजगार दिया जाता है, जिसमें 5 गांवों के 50 किसान शामिल होते हैं।

कृषि उद्यमिता के लिए अन्य विकल्प भी उपलब्ध हैं जैसे ट्री क्लाइम्बर मशीन बनाना, चाय नर्सरी, मछलियों का सौर सुखाना, रेशम उत्पादन, दाल प्रसंस्करण इकाइयां, पालतू देखभाल इकाइयां, फल, गन्ना, गाय के गोबर से मच्छर

भगाने वाले विशिष्ट पौधों के लिए नर्सरी, कीट नियंत्रण के लिए जैविक गाय आधारित रसायन, गुड़ प्रसंस्करण इकाइयां, स्वस्थ स्मूदी बनाना, जैविक खाद्य पदार्थों के लिए ई-कॉमर्स आदि।

क्षेत्र की आवश्यकताओं और विनिर्देश के अनुसार वर्तमान कृषि प्रथाओं के साथ कृषि को अधिक लाभदायक व्यवसाय विकसित करने के लिए विशिष्ट व्यावसायिक उद्यम स्थापित किया जा सकता है।

निष्कर्षत: यह आलेख कृषि आधारित उद्यमिता के भारत की सफलता की कहानियों के संकलन पर आधारित है। इस आलेख का मूल उद्देश्य युवाओं में कृषि आधारित उद्यमशीलता को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय उन्नति में भागीदारी सुनिश्चित करना है। यहाँ महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि वार्षिक टर्नओवर के आधार पर इन उद्यमों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है तथा विभिन्न श्रेणियों में कार्य करने के लिए बुनियादी गुणों के साथ तकनीकी ज्ञान, पेशेवर नेटवर्क का विकास, विपणन तकनीकों के उपयोग के साथ-साथ सहयोग की भावना के विकास के साथ समेकित विकास किया जा सकता है। आज अवसरों की कमी नहीं अपितु ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो कृषि एवं सम्बंधित क्षेत्र की समस्याओं को समझ कर उनका निराकरण कर स्वयं और अपने परिवेश में प्रगति की बयार बहा सके।

## संदर्भ


1. एम. लक्ष्मण अहिरे, सी. श्रीनिवास राव, एच. कीर्तिरंजन बराल, एवं वर्षा रानी, 'ग्रामीण विकास के लिए कृषि पर्यटन, खेती', *राष्ट्रीय पत्रिका,* 77(8), 2025, पृ. 4-7
2. एस.एल. बैरवा, के. लकरा, एस. कुशवाहा, एल.के. मीना, एण्ड पी. कुमार, 'एग्रीप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट एज़ ए टूल टू अपलिफ्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर', 4(3), 2014, पृ. 1-4.
2. के.के. चंद, आईजेआरटीबीटी, 'एग्रीप्रेन्योरशिप: ए टूल फॉर इकोनॉमिक डेवलपमेंट ऑफ इंडिया इन द न्यू मिलेनियम', 3(अक्टूबर), 2019, पृ. 19-25.
3. जे. ग्रांडे, 'न्यू वेंचर क्रिएशन इन द फार्म सेक्टर - क्रिटिकल रिसोर्सेज एंड कैपेबिलिटीज', *जर्नल ऑफ़ रूरल स्टडीज,* 27(2), 2011.
4. डी. दाश, 'ए रिव्यू ऑन ऑर्गेनिक फार्मिंग एज़ ए पोटेंशियल सेक्टर ऑफ

एग्रीप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट अमंग द ट्राइबल यूथ ऑफ इंडिया', 11 अक्टूबर, 2018, पृ. 761-767.

5. डी. दाश, एण्ड जी.एस. महरा, 'जनरेटिंग लाइवलीहुड फॉर ट्राइबल यूथ थ्रू एग्रीप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट प्रॉस्पेक्टस, रेट्रोस्पेक्ट, कंस्ट्रेंट्स एंड स्ट्रेटेजीज', 2018, 7(5), पृ. 3412-3416.

6. दायकर,बी. राव, जे.वी. पाटिल, एम.पी. राजेंद्र प्रसाद, के.एन. रेड्डी, के. देवी, बी. श्रीहर्ष, एण्ड एन. कचुई, 'इम्पैक्ट ऑफ इनोवेशन्स इन वैल्यू चेन ऑन सॉरगम फार्मर्स', *एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स रिसर्च रिव्यू,* 23, 2010, पृ. 419-426.

7. डी. मेरियट, 'फैक्टर्स एसोसिएटेड विद द फार्मर सुसाइड क्राइसिस इन इंडिया', *जर्नल ऑफ एपिडेमियोलॉजी एंड ग्लोबल हेल्थ,* 6(4), 2016, पृ. 217-227.

8. डी. रेड्डी, एण्ड वी. कृष्ण, 'इम्प्रूविंग फार्मर्स इनकम बाय प्रमोटिंग एग्रीप्रेन्योरशिप ऑन बेसिस ऑफ शेयर्ड इकोनॉमी प्रिंसिपल', 118(18), 2018, पृ. 4729-4738.

9. एस.के. सिंह, एण्ड आर. प्रवेश, 'एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट इन इंडिया ओपोरचुनिटीज एंड चेलेन्जेज', (3), 2017, पृ. 75-82.

10. एस.एस. उपलौंकर एण्ड एस.एस. बिरादर, 'डेवलपमेंट ऑफ एग्रीकल्चर इन इंडिया थ्रू एग्रीप्रेन्योर्स', *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च,* 1(19), 2015, पृ. 1063-1066.

11. जे. विक, एण्ड जी. मेलवी, 'डायवर्सिफिकेशन एंड दी एन्त्रेप्रेंयूरिअल मोतीवाशंस ऑफ़ फार्मर्स इन नॉर्वे', *जर्नल ऑफ़ स्माल बिज़नेस मैनेजमेंट,* 49(3), 2011.

**सहायक प्रोफेसर**
आई.ए.बी.एम.
एस.के. राजस्थान एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी
बीकानेर (राज.)